"पूर्णिया जनपद के ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में पारिवारिक समायोजन एवं सामाजिक समानता के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन "

विद्या वाचस्पति (पीएच.डी.)

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शिक्षा शास्त्र

शोध "संक्षेपिका "

2024

वाई.बी.एन.विश्वविद्यालय रांची (झारखंड)

पर्यवेक्षक

डॉ. सुमन कुमारी
सहायक प्राध्यापिका
शिक्षा शास्त्र संकाय
वाई.बी.एन.विश्वविद्यालय
रांची(झारखंड)

शोधार्थी

कुमारी किरण
पंजीयन सं.-YBNU2302392
शिक्षा शास्त्र संकाय
वाई.बी.एन. विश्वविद्यालय
रांची(झारखंड)

शोध केंद्र
शिक्षा शास्त्र संकाय
वाई.बी.एन.विश्वविद्यालय,रांच

"पूर्णिया जनपद के ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में पारिवारिक समायोजनएवं सामाजिक समानता के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन "

प्रस्तावना-

बृहद समूह समाज का एक प्रतिरूप है, जिसमें समस्त मानव अपने मानव क्रियाकलापों के माध्यम से एक दूसरे से परस्पर जुड़े हुए होते हैं। भारत में सभी समाज एक अलग पहचान बनाते हुए अलग-अलग परंपरा, रीति रिवाज, खान-पान वेशभूषा एवं महिलाओं की स्थिति भिन्न-भिन्न है। परिवार को संजोये एवं सवारे रखने में महिलाओं का अहम स्थान होता है। महिलाओं का शिक्षित होना आवश्यक है क्योंकि शिक्षित महिलाएं स्वयं को आत्मनिर्भर बनाते हुए अपने परिवार एवं राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। शिक्षित महिलाएं अपने बच्चों का बेहतर पालन पोषण और शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। शिक्षा समाज में व्याप्त लैंगिक रूढ़ियों और भेदभाव को तोड़ने मे सहायक एवं सभी के लिए समान अवसर प्रदान करती है। महिला शिक्षा सिर्फ एक लड़की के लिए नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र के विकास और प्रगति के लिए आवश्यक निवेश बन सकती है।

" आप किसी भी राष्ट्र में महिलाओं की स्थिति देखकर उस राष्ट्र की स्थिति बता सकते हैं"

- जवाहरलाल नेहरू

संपूर्ण राष्ट्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है महिला और पुरुष दोनों एक समान रूप से समाज एवं परिवार में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

भारत में महिला शिक्षा का इतिहास- भारत में महिला शिक्षा के वर्तमान स्थिति का आकलन करने के लिए महिला शिक्षा का इतिहास को समझना आवश्यक है इसे तीन भागों में बाँटकर समझा जा सकता है-

1. प्राचीन वैदिक महिला शिक्षा

2. ब्रिटिश भारत में महिला शिक्षा

3. स्वतंत्र भारत में महिला शिक्षा

1. प्राचीन वैदिक महिला शिक्षा -भारत में महिला शिक्षा का इतिहास वैदिक काल से प्रारंभ हो चुका था लगभग 3000 वर्ष पूर्व भारत में महिलाओं की स्थिति समाज में उच्चतम एवं प्रतिष्ठित रूप में थी। पुरुष के समान स्थान प्राप्त था। स्त्री सिद्धांत के अनुसार महिलाओं की देवी रूप में पूजा होती थी।

2. ब्रिटिश भारत में महिला शिक्षा- इस काल में पहला ऑल गर्ल्स बोर्डिंग स्कूल वर्ष 1821 में दक्षिण भारत के तिरुनेलवेली मे स्थापित किया गया था। पश्चिम भारत में महिला शिक्षा की शुरुआत पुणे में गर्ल्स स्कूल के निर्माण के साथ हुई जिसे वर्ष 1848 में ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले ने शुरू किया था। ईस्ट इंडिया कंपनी के कार्यक्रम भारत डिस्पैच ने वर्ष 1854 में महिलाओं की शिक्षा और उनके लिए रोजगार की आवश्यकता को स्वीकार किया। 1879 ई. बेथ्यून महाविद्यालय वर्तमान में एशिया का सबसे पुराना महिला महाविद्यालय है। वर्ष 1882 में महिला साक्षरता दर 0.2 % से बढकर सन् 1947 में 6% हो गयी।

3. स्वतंत्र भारत में महिला शिक्षा- स्वतंत्रता के समय देश में महिला साक्षरता दर काफी कम थी जिसे सरकार ने गंभीर रूप से लेते हुए वर्ष 1958 में सरकार ने महिला शिक्षा पर एक राष्ट्र समिति का गठन किया, जिसका उद्देश्य पुरुष शिक्षा के समानांतर महिला शिक्षा को पहुंचाया जा सके।कोठारी आयोग के सिफारिश को बड़े पैमाने पर महिला शिक्षा के समान पाठ्यक्रम में लागू करने की सिफारिश की गयी।

वर्तमान समय में महिलाओं के उच्च साक्षरता दर भारत में महिला साक्षरता दर बड़ी है। 2021 के अनुसार लगभग 91.95% तक पहुंचाने का अनुमान लगाया गया है, जिससे महिलाएं सामाजिक आर्थिक एवं पारिवारिक रूप से संपन्न हो सके और समाज में सक्रिय भूमिका निभा सके।

महिलाएं हर क्षेत्र में योगदान दे रही हैं। सास्कृतिक बधाएं,आर्थिक चुनौतियां और बुनियादी ढांचे की कमी जैसी समस्याएं, आज भी उच्च शिक्षा तक पहुंचने में बाधित करती हैं। शिक्षित महिलाओं के पारिवारिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। बच्चों की शिक्षा और विकास में शिक्षित माताएं अपने बच्चों को समान दृष्टि से देखते हुए लड़कियों की शिक्षा पर भी विशेष ध्यान देती है। शिक्षित महिलाएं अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग एवं जागरूक रहती है। साथ ही साथ परिवार के सदस्यों की भी बीमारियों से बचाव के लिए पहले से तत्पर रहती है। पारिवारिक निर्णय और सशक्तिकरण में शहरी महिलाओं में आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता,आत्म सम्मान की प्राप्ति आसानी से हो जाती है। आर्थिक रूप से मजबूत होने पर महिलाएं अपना तथा अपने परिवार के समस्त सदस्यों को सशक्त जीवन दिलाने में सक्षम होती है। वहीं दूसरी ओर ग्रामीण एवं अशिक्षित महिलाएं कई प्रकार की परेशानियों का सामना करते हुए उन्हें रहना पड़ता है।घरेलू हिंसा, बाल विवाह, आर्थिक रूप से कमजोर,शोषण का शिकार होती है अशिक्षित महिलाओं में

अशिक्षा के कारण अपने अधिकार, विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने में असमर्थ होती है। परिवार में महिलाओं को चार दिवारी में कैद रहना पड़ता है। कम उम्र में विवाह के कारण कम उम्र में माँ बनना, जिससे उसके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। मानसिक एवं शारीरिक शोषण का शिकार होते रहती है।आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण उसे दूसरे पर निर्भर रहना पड़ता है। किसी भी निर्णय में उसकी सहमति नहीं ली जाती है। उन्हें बात-बात पर नीचा दिखाया जाता है, जिसका प्रभाव महिलाओं के मानसिक स्थिति पर पड़ता है,जो की आगे चलकर गंभीर समस्या का रूप ले लेती है ग्रामीण महिलाएं एवं युवतियाँ, विश्व आबादी का एक चौथाई हिस्सा के रूप में अपनी भूमिका निभाती है। वह विकसित एवं विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका के रूप में अग्रसर है। विकासशील देशों के अधिकांश जगहों में महिलाएं फसल उत्पादन और पशुपालन इत्यादि में तत्पर रहती हैं अपने परिवार के लिए भोजन पानी ईंधन की व्यवस्था करती हैं अपने परिवार की उन्नति के लिए गैर सरकारी गतिविधियों से जुड़ जाती हैं। साथ ही साथ बच्चे,वृद्ध एवं बीमारों की देखभाल को अपने जिम्मेदारी समझते हुए कार्य करती हैं। ग्रामीण क्षेत्र में महिलाएं अवैतनिक रूप से कार्य करती है। भारत में 71% से अधिक ग्रामीण महिलाएं खेतीहर मजदूर के रूप में कार्य करती हैं।वर्तमान भारत में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की पारिवारिक जीवन शैली में काफी परिवर्तन देखने को मिल रहा है जिसका मुख्य कारण तकनीकी साधनों का बढ़ता प्रभाव एवं आधुनिकीकरण एवं वैश्वीकरण का प्रभाव माना जा सकता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन -:

संबंधित साहित्य का अध्ययन शोध समस्या की योजना के निर्माण एवं उसकी क्रियाविधि के पूर्व आवश्यक है,क्योंकि इससे शोधार्थी को इस तथ्य का ज्ञान हो जाता है कि पूर्व में किस प्रकार के शोध कार्य किन-किन प्रक्रिया के माध्यम से

किया गया है तथा उसके परिणाम शोधार्थी को दिशा निर्देश प्रदान करता है। शोधार्थी के अनुसार संबंधित साहित्य के अध्ययन से इन शोध में निम्न बिंदुओं को निर्धारित करने में सहायता मिलती है -

1.संबंधित साहित्य के अध्ययन से शोध समस्या के सीमांकन में सहायता मिलती है।

2. संबंधित साहित्य के अध्ययन से शोध समस्या के गहन अध्ययन में सहायक सिद्ध होती है।

3. संबंधित साहित्य शोध समस्या की पुनरावृत्ति से बचाता है।

4. यह शोध समस्या का पारिभाषिककरण एवं परिकल्पनाओं के निर्माण में सहायक सिद्ध होती है।

5. संबंधित साहित्य का अध्ययन उपलब्ध स्रोतों के उपयोग एवं समंकों के विश्लेषण हेतु उपयुक्त विधि का चयन अपेक्षित है।

6. यह शोध निष्कर्ष के विश्लेषण के आधार पर शोधकर्ता में आत्मविश्वास जगाने के लिए आवश्यक है।

* स्वामी एस (1990) ने विदर्भ क्षेत्र के 9 जिलों में महिलाओं की शिक्षा का 1947 से 1987 की अवधि का आलोचनात्मक अध्ययन किया और प्राथमिक स्तर पर हुई महत्वपूर्ण प्रगति की ओर इशारा किया, लेकिन लड़कियों में उच्च स्तर की अपव्ययता और ठहराव पाया, जिसका मुख्य कारण अलग विद्यालयों और महिला शिक्षकों की कमी बताया गया। उच्च शिक्षा में लड़कियां अधिकतर सामान्य शिक्षा में थी, जबकि कुछ ही तकनीकी शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर रही थी।

* राजशेखर वी. एन (2005) ने 'विश्वविद्यालय समाचार में शिक्षा के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण 'शीर्षक से अपने लेख में कहा कि भारत महिलाओं के सशक्तिकरण को शिक्षा में लड़कियों और महिलाओं की भागीदारी के लिए सबसे महत्वपूर्ण मानता है। केंद्र और राज्य सरकारों की लैंगिक असमानताओं को प्रभावित ढंग से दूर करने के लिए महिलाओं के सशक्तिकरण पर नीतियां लागू है।

4. एच. सुब्रमण्यम (2010) - अध्ययन से ज्ञात होता है कि विद्यालयों में भाग लेने वाले ग्रामीण लड़कियों की संख्या अभी बढ़ रही है। बिहार में निरक्षरता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच प्रमुख चिंता का विषय है। दूसरी ओर बिहार में शिक्षा दर शहरी और ग्रामीण महिलाओं के साथ-साथ पुरुष और महिला आबादी के बीच व्यापक अंतर पाया गया।

* स्वर्ण जयवीरा(2010) अध्ययन से ज्ञात होता है कि लैंगिक विचारधारा और सामाजिक, आर्थिक संरचनात्मक बधाओं के इंटरफेस के परिणामस्वरुप शिक्षा और महिलाओं के आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक सशक्तीकरण के बीच कोई सकारात्मक रैखिक संबंध नहीं है।

* राजनाथ (2011) - शिक्षा में लिंग समानता, सामाजिक और आर्थिक आधार पर पुरुष की तुलना में महिलाओं की स्थिति अच्छी नहीं है, जिसका मुख्य कारण शैक्षिक समानता का ना होना है। हमारे देश में आज भी पितृसत्तात्मक सोच का स्तर उच्चतर है। जिस कारण से समानता का अभाव पाया जाता हैं।

* जयतीन पांडे (2012) - अध्ययन में ज्ञात होता है कि स्वयं सहायता समूह की महिलाओं की सामाजिक -आर्थिक स्थिति में सुधार हो रही है। महिलाएं ऋण के द्वारा अपने व्यवसाय में आगे बढ़ रही है। गरीब महिलाएं सूक्ष्म ऋण प्राप्त कर

उसका उपयोग पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति में करती है। महिलाएं पारिवारिक निर्णय और सामाजिक क्रियाकलापों में पूर्ण सहभागिता निभाती है तथा गांव या उससे बाहर के क्षेत्र तथा रिश्तेदारों के घर आने जाने के लिए स्वतंत्र है।

* डॉ अंशुमन साहू (2013)- सहायता समूह में जुड़ने के बाद महिलाओं की आय में वृद्धि हुई है महिलाएं सूक्ष्म ऋण का उपयोग व्यवसाय, व्यक्तिगत उपयोग, कृषि कार्य,चिकित्सा, गृह निर्माण आदि काम में करती हैं। समूह के द्वारा महिलाओं में बचत करने की आदत विकसित होती है। महिलाओं में परिवार निर्णय क्षमता में वृद्धि हुई है।

* बलवीर कुमार (2013) अध्ययन में पाया गया कि देश की शिक्षा प्रणाली में जहां पुरुष प्रधान समाज मौजूद है, वहां हर जगह लिंग भेदभाव देखा जा सकता है। इसके लिए महिलाओं को जागरूक करने की आवश्यकता है। आयोग एवं समिति के गठन के बाद भी लड़कियों के नामांकन दर पर गिरावट देखने को मिलती है विद्यालय में लड़कियों को उच्च सुविधा नहीं मिल पाने के कारण ड्रॉप आउट की गंभीर समस्या उत्पन्न हो जाती है।

* डॉ. आर राधिका देवी (2014) आत्मनिर्भर महिलाओं को पारिवारिक निर्णय में शामिल किया जाता है। वे परिवार के उन्नति में अपना आर्थिक सहयोग प्रदान करती है। स्वरोजगार करने वाली महिलाएं बुनाई, सिलाई,खाद्य सामग्री बनाने आदि कार्यों में शामिल होकर अपना रोजगार स्वयं तलाश रही है।

* तिरपति कुमारी(2015) - महिलाएं अपनी क्षमताओं का विकास कर स्वयं सशक्त हो रही है। समूह की प्रेरणा के माध्यम से महिलाएं परिवार एवं समाज में सम्मान प्राप्त कर रहे हैं। परिवार में अपने बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिलाने में अपनी

महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ग्रामीण महिलाएं वर्तमान समय में स्वरोजगार कर आत्मनिर्भर बन रही है।

* इलाकिया के (2018) - भारत में महिला शिक्षा का विश्लेषण और इसका प्रभाव में 'भारत में महिला शिक्षा के विकास और उसके प्रभाव ' का अध्ययन किया। इस शोध पत्र में शिक्षा की कमी के कारण महिलाएं एवं हजारों वर्षों से हास्य पर रही है और सार्वजनिक क्षेत्र में मौन और अदृश्य रही हैं चुंकि महिला साक्षरता का जनसंख्या के स्वास्थ्य स्तर में गहरा संबंध है,इसलिए महिला शिक्षा की कमी के परिणाम स्वरुप शिशु मृत्यु दर, मातृ मृत्यु दर, जन्म दर, मृत्यु दर में वृद्धि हुई है और जन्म के समय जीवन प्रत्याशा में कमी आई है। स्वास्थ्य स्तर में सुधार हुआ है। सकल नामांकन अनुपात बड़ा है और लड़कियों की स्कूल छोड़ने की दर कम हुई है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य -

भारतीय संस्कृति की गरिमामयी पहँचान हमारे देश की नारियों के बिना अधूरी है। नारी प्रेममयी, करुणामयी, दयावान एवं सहनशीलता के प्रतिमूर्ति कही जाती हैं।2011 की जनगणना के अनुसार भारत में महिलाओं की कुल आबादी लगभग 58.64 करोड़ थी, जो 2021 से 2024 के आंकड़ों के अनुसार 64 करोड़ तक हो गई है। भारत देश के एक राज्य बिहार में वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार पूर्णिया जिले की जनसंख्या महाराष्ट्र के कुल जनसंख्या का 3.07% था। 2001 की जनगणना की तुलना में पूर्णिया जिले की जनसंख्या में 28.33% की वृद्धि हुई है। भारत की जनगणना 2001 में पूर्णिया जिले की जनसंख्या में 1991 की तुलना में 35.23% की वृद्धि दर्ज की गई है। 2011 की जनगणना के अनुसार महिलाओं के कुल जनसंख्या

1,565,249 है। महिला साक्षरता दर लगभग 42.34%(ग्रामीण एवं शहरी)। पूर्णिया जिले के शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं की पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति का गहन अध्ययन करने की आवश्यकता है शोधार्थी के द्वारा पूर्णिया जिले की शहरी एवं ग्रामीण महिलाएं, जो शिक्षित एवं अशिक्षित के आधार पर कैसे प्रभावित हो रही हैं, इसका अध्ययन करने की आवश्यकता है। महिलाओं की समस्या का अध्ययन करके महिलाओं को सशक्त बनाने में अपना योगदान देना है। वर्तमान समय में आधुनिकीकरण, वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास के साथ वैश्वीकरण का युग है,जिसमें पूर्णिया जिले की महिलाएं पिछड़ी हुई नजर आती हैं।महिलाओं का सशक्त होना अति आवश्यक है क्योंकि महिलाएं परिवार , समाज, राज्य एवं राष्ट्र के विकास में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं महिलाएं अपने परिवार को इस तरीके से संचालित करती है जैसे एक राष्ट्र का प्रधानमंत्री अपने देश को संचालित एवं क्रियान्वित करते है। परिवार के बच्चे अपने माता-पिता के प्रतिरूप होते हैं, उन्हें जैसा बनाया जाए जैसा संस्कार दिया जाए, उसके अनुरूप बच्चे अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं इसलिए माता-पिता को सर्वप्रथम स्वयं सशक्त होना चाहिए तभी वह समस्त समाज को सशक्त बना सकते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य -

किसी भी कार्य को प्रारंभ करने से पहले उद्देश्य निश्चित किए जाते हैं और इस उद्देश्य के आधार पर चलकर लक्ष्य तक पहुंच जाता है प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्न उद्देश्य हैं -

• पूर्णिया जनपद के शहरी महिलाओं के पारिवारिक समायोजन का अध्ययन करना।

• पूर्णिया जनपद के ग्रामीण महिलाओं के पारिवारिक समायोजन का अध्ययन करना।

• पूर्णिया जनपद के शहरी महिलाओं की सामाजिक समानता का अध्ययन करना।

• पूर्णिया जनपद के ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक समानता का अध्ययन करना।

• पूर्णिया जनपद के शिक्षित महिलाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।

• पूर्णिया जनपद के ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में पारिवारिक समायोजन का अध्ययन करना।

• पूर्णिया जनपद के उच्च वर्ग, मध्यम और निम्नवर्ग की महिलाओं का अध्ययन करना।

• ग्रामीण महिलाओं की पारिवारिक स्थिति का अध्ययन करना।

* शहरी महिलाओं की पारिवारिक स्थिति का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना -

परिकल्पना किसी समस्या से संभावित समाधान पर विचार करना है। परिकल्पना के बिना शोध कार्य उद्देश्यहीन कार्य हैं। परिकल्पना के निर्माण से, समस्या से संबंधित तर्क संगत आंकड़ों के संकलन में सही दिशा मिलती है तथा उपयुक्त वैध एवं निष्कर्ष के अनुमान में सुविधा एवं सरलता रहती है। तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत समस्या के अध्ययन हेतु निम्नलिखित शुन्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है -

Ho1 पूर्णिया जनपद के शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं की पारिवारिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

Ho2 पूर्णिया जनपद के शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक समानता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

Ho3 पूर्णिया जनपद के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के मध्यम वर्ग के परिवार की महिलाओं के सामाजिक समानता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

Ho4 पूर्णिया जनपद के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च वर्ग के परिवार की महिलाओं की सामाजिक समानता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

Ho5 पूर्णिया जनपद के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के निम्न वर्ग के परिवार की महिलाओं के सामाजिक समानता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

समस्या कथन-

"पूर्णिया जनपद के शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं में पारिवारिक समायोजनएवं सामाजिक समानता के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन "

तकनीकी शब्दों की व्याख्या-

- पारिवारिक समायोजन
- सामाजिक समानता
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र
- सामाजिक- आर्थिक आधार

* **पारिवारिक समायोजन -** पारिवारिक समायोजन परिवार के सदस्यों के मध्य आपसी सामंजस्य को दर्शाता है, जिसमें सदस्यों के बीच मन, विचारों एवं भावनाओं को ध्यान में रखते हुए परिवार के सदस्य आपसी प्रेमभाव से रहते हैं। पारिवारिक समायोजन परिवार के सदस्यों को एक -दूसरे के साथ जोड़े रखने में सहायक होती है। परिवार के सदस्य पारिवारिक सामंजस्यता को बनाए रखने के लिए अपने दिनचर्या और व्यवहार में भी परिवर्तन लाने में संकोच नहीं करते हैं क्योंकि परिवारिक ए एकजुटता के लिए परिवार के सदस्यों का व्यवहार मिलना आवश्यक होता है। परिवार के सदस्यों के बीच विशेष रूप से तनावपूर्ण स्थितियों में भावनात्मक तालमेल और समझ बनाए रखने की क्षमता होनी चाहिए प्रवास की स्थिति में बाहरी सास्कृतिक मांगों के अनुरूप स्वयं को ढालने के लिए पारिवारिक समायोजन किया जाता है। परिवार में महिलाएं परिवार को जोड़े रखने के लिए परिवार के अन्य सदस्यों की तुलना में अधिक समायोजन करती है।

सामाजिक समानता- समाज के अंदर एक ऐसी व्यवस्था जिसमें व्यक्ति को लिंग, जाति,वर्ग धर्म,नस्ल या रंग के आधार पर भेदभाव किए बिना समान अधिकार समान अवसर प्राप्त होता है। सामाजिक समानता के अंतर्गत प्रत्येक व्यक्ति को अपनी प्रतिभा और स्वयं के विकास होने के लिए समान अवसर मिलते हैं। स्वस्थ्य शिक्षा, न्याय, बुनियादी सेवाएं हर नागरिक तक समान रूप से मौजूद होता है। स्त्री -पुरुष को समाज में समान अधिकार एवं सम्मान प्राप्त होता है। क्षमता के अनुरूप प्रत्येक प्राणी अपने प्रतिभा को प्रदर्शित करके अपने जीवन को बेहतर तरीके से आगे बढ़ने का अवसर सामाजिक समानता प्रदान करता है। इसका उद्देश्य एक ऐसी निष्पक्ष और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना करना है, जहां देश के हर नागरिक चाहे वह स्त्रीलिंग,पुल्लिंग या नपुंसकलिंग हो सभी को एक समान अवसर सामाजिक समानता प्रदान करता है।

ग्रामीण क्षेत्र- ग्रामीण क्षेत्र एक ऐसा भौगोलिक क्षेत्र है,जिसमें लोग कृषि पशुपालन एवं अन्य प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करके अपना जीवन यापन करते हैं ग्रामीण क्षेत्र की आबादी बिखरी हुई होती है। कृत्रिम की जगह प्राकृतिक सुविधाओं पर ग्रामीण लोगों को निर्भर रहना पड़ता है। इनके पास रोजगार के अवसर कम होते हैं,अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य रोजगार, यातायात की सुविधा का अभाव पाया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र में स्त्रियों की स्थिति काफी दैनिय होती है।

नगर पंचायत -नगर पंचायत ऐसा प्रशासनिक ढ़ांचा है, जो गांव से बड़े होते हैं, लेकिन नगर के दर्जे तक नहीं पहुंची होती है, जैसे तहसील या कोई बड़ा कस्बा होता है. ये इलाके भी वार्डों में बंटे होते हैं. वहीं वार्डों से चुनकर आए प्रतिनिधि इसे चलाते हैं, इसमें एक अध्यक्ष और कुछ सदस्य शामिल होते हैं। सदस्यों एवं अध्यक्ष का चुनाव जनता करती है।

शोध अभिकल्प -:

प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्णनात्मक शोध अभिकल्प पर आधारित है, इसके माध्यम से ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की स्थिति एवं समायोजन को समझने के लिए वर्णनात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया जाएगा। इसके द्वारा महिलाओं की स्थिति एवं सामाजिक समानता के विभिन्न पक्षों को समझने का प्रयास किया जाएगा। वर्णनात्मक शोध विधि के माध्यम से विभिन्न चरो के बीच संबंध को दर्शाया जाएगा। प्रस्तुत शोध अध्ययन गुणात्मक एवं मात्रात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है।परिस्थितियाँ अथवा संबंध जो वास्तव में विधमान है विश्वास, विचारधारा अथवा अभिवृत्ति जो पाई जाती है इससे संबंधित है। गुणात्मक विधि द्वारा शाब्दिक वर्णन किया जाता है एवं मात्रात्मक पद्धति द्वारा गणितीय सूत्र के आधार पर वर्णन किया जाता है। प्रस्तुत शोध समस्या में मापन अथवा गणना के द्वारा संख्यात्मक आंकड़ों का संकलन किया जाएगा।

प्रस्तावित अनुसंधान पद्धति-:

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रस्तावित अनुसंधान पद्धति में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया जाएगा। इस पद्धति के द्वारा वर्तमान दशा से संबंधित आंकड़ों को एकत्रित किया जाएगा। अध्ययन का क्षेत्र एवं उसकी गहराई को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण पद्धति द्वारा अध्ययन किया जाएगा। पूर्णिया जनपद के शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं में पारिवारिक समायोजन, पारिवारिक समानता एवं महिलाओं के समानता के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन से संबंधित आंकड़ों का संकलन वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति द्वारा किया जाएगा।

जनसंख्या तथा न्यादर्श - पूर्णिया जनपद के 14 ब्लॉक के अंतर्गत पांच नगर पंचायत एवं पांच ग्रामीण पंचायत में अवस्थित महिलाओं की संख्या अध्ययन की

जनसंख्या है। जनसंख्या के एक ऐसे भाग या अंश को प्रतिदर्श कहते हैं जो उन जनसंख्या का प्रतिनिधि होता है। न्यादर्श के चयन हेतु 350 शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं का चयन किया जाएगा। इसमें सिंपल रेंडम सेंपलिंग का प्रयोग किया जाएगा।

आंकड़ा संकलन स्त्रोत -: आंकड़ों का संकलन प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत के आधार पर किया जाएगा। प्राथमिक स्रोत के अंतर्गत मानकीकृत प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया जाएगा। इसमें निम्न मानकीकृत मापनी का प्रयोग किया जाएगा -

* महिलाओ की समानता के प्रति दृष्टिकोण संबधी मापनी

* वैवाहिक समायोजन सूची

* सामाजिक- आर्थिक स्थिति मापनी

द्वितीयक स्रोत में पत्रिका, पुस्तक लेख, समाचार पत्र,वेबसाइट एवं अन्य स्रोतों के आधार पर संकलन किया जाएगा।

अध्ययन का सीमांकन -

किसी भी शोध अध्ययन के लिए अध्ययन क्षेत्र का होना अनिवार्य है। समस्या पर गहन अध्ययन हेतु व्यवहारिक रूप से सीमांकित करना आवश्यक होता है। प्रस्तुत अध्ययन निम्न पर सीमांकित है -

* प्रस्तुत शोध अध्ययन बिहार राज्य के पूर्णिया जनपद पर सीमांकित है.

* प्रस्तुत शोध अध्ययन पूर्णिया जनपद के नगर पंचायत एवं ग्रामीण क्षेत्र पर सीमांकित किया गया है।

* प्रस्तुत शोध अध्ययन में 18 वर्ष - 45 वर्ष की महिलाओं को सीमांकित किया गया है।

* प्रस्तुत शोध अध्ययन 5 नगर पंचायत एवं 5 ग्रामीण पंचायत पर सीमांकित किया गया है।

* प्रस्तुत शोध अध्ययन विवाहित महिलाओं पर सीमांकित है।

* प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च वर्ग की महिलाओं को सीमांकित किया गया है।

* प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यम वर्ग की महिलाओं को सीमांकित किया गया है।

* प्रस्तुत शोध अध्ययन निम्नवर्ग की महिलाओं पर सीमांकित है।

अध्यायीकरण

1. प्रथम अध्याय

   अध्ययन की पृष्ठभूमि

2. द्वितीय अध्याय

   संबंधित साहित्य का पूर्वावलोकन एवं समीक्षा

3. तृतीय अध्याय

   शोध अभिकल्प

4. चतुर्थ अध्याय

   आंकड़ों का सारणीयन एवं विश्लेषण

5. पंचम अध्याय

   अध्ययन का निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ सूची-

* सेंसस रिपोर्ट(2001) WWW.censusindia.gov.in

* यूनेस्को रिपोर्ट(1991) एक्सेस ऑफ़ वीमेन एंड गर्ल टू टेक्निकल वोकेशनल एजुकेशन इन इंडिया, 36

* देसाई एस. (1994) जेंडर इनिक्वालिटीज एण्ड डेमोग्राफिक बिहेवियर पापुलेशन काउंसिल।

* पूजा और सिंह जयदीप(2013) गोल्डन रिसर्च थॉट वूमेन इन इंडिया वॉल्यूम-2,नंबर 4, P -1- 4

* वर्लकाफ विक्टोरिया ए वूमेनस एजुकेशन इन इंडिया, फ्रॉम WWW.census.gov.in

* गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया (2021) नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 मिनिस्ट्री ऑँफ एजुकेशन एचटीटीपीएस:// www.moe.gov.in साइट्स।

* रेडी वी.एस. (2018) द इंपैक्ट ऑफ़ सोसायोइकॉनॉमिक्स फैक्टर्स वूमेन एजुकेशन इन इंडिया इकोनॉमिक्स एंड पॉलीटिकल वीकली 42 - 50 www.epw.in